प्रेस विज्ञप्ति

यह एसोफेजियल एट्रेसिया नामक असामान्य जन्म दोष के बारे में है जहां खाद्य पाइप की निरंतरता गायब है । नतीजा अंधा भोजन पाइप पाउच है जो क्लैविकिल के ऊपर समाप्त होता है और पेट एसोफैगस से जुड़ा नहीं होता है । यह 10000 जन्मों में से एक होता है । नतीजा यह है कि बच्चा लार या दूध निगलने में सक्षम नही होता है । ट्राइकिया में लार का स्पिल्ज निमोनिया और मृत्यु के लिए जिम्मेदार है । इस जन्म दोष के सुधार के लिए स्थापित तकनीकों का वर्णन ट्यूब फीडिंग के लिए सर्जरी द्वारा पेट में ट्यूब की प्रविष्टि और खाद्य पाइप के ऊपरी अंधा अंत को लार के लिए रास्ता देने के लिए त्वचा से बाहर किया जाता है । एक बार बच्चा दो साल का हो गया है वजन बढ़ गया है, तो गायब फूड पाइप खंड पेट या कोलन के खंड से स्थापित किया जाता है । लेकिन जीवन के लिए इन मामलों में प्राकृतिक esophagus गायब रहती है जिसके काम्लीकेशन रहते है ।

इस समस्या को दूर करने के लिए 1994 में जापान से Dr. Kimura ने ऊतक इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी का उपयोग करके एसोफेजेल लांगिथिंग की एक नई तकनीक का वर्णन किया और 3 या 4 चरणों के बाद प्राकृतिक एसोफैगस पेट तक बढ़ा दिया गया और इससे जोड़ दिया गया । प्रतिस्थापन की जटिलताओं से परहेज प्राकृतिक esophagus से बेबी

लाभान्वित हो जाता है । इस तकनीक के साथ भारत में सफलता पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग, क0जी0एम0यू0 से पहली बार रिपोर्ट की जा रही है । विवरण नीचे है ।

सुल्तानपुर से रोगी मास्टर डी। तिवारी (नाम बदल गया) एसोफेजियल एट्रेसिया की बीमारी से पैदा हुआ था, जन्म वनज 2.5 किलो था ।

2012 में बाल चिकित्सा सर्जरी के0जी0एम0यू0 में पहला चरण सफल सर्जरी प्रोफेसर एस0एन0 कुरील द्वारा किया गया । पेट में ट्यूब के माध्यम से खिलाने के प्रावधान के साथ और ऊपरी अंधा पाउच एसोफैगल का डा0 कुरील ने किमुरा तकनीक शुरू करने के लिए बढ़ा दिया गया था ।

2013 में टिशू इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी का उपयोग करके खाद्य पाइप को और बढ़ाया गया था ।

2015 और 2017 में, टिशू इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी का उपयोग करके खाद्य पाइप को और बढ़ाया गया था ।

अंतिम चरण सर्जरी 6 सितंबर 2018 को प्रो0 एस0एन0 कुरील द्वारा किया गया था । प्राकृतिक एसोफैगस की पूरी लंबाई प्राप्त कर लिया गया जिसे थोरैक्स के माध्यम से पेट में जोड़

दिया गया । रोगी को ठीक कर लिया गया है, और अब बिना किसी कठिनाई के बच्चा चॉकलेट इत्यादि के अ़र्द्ध ठोस और ठोस भोजन ले सकता है ।

डा0 एस0एन0 कुरील के द्वारा पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग, के0जी0एम0यू0 से भारत में पहली बार इस तकनीक के साथ सफलता सूचित की जा रही है और पूरी दुनिया में 19 सफल मामलों की सूचना उपलब्ध है ।

सर्जिकल टीमः– प्रो0 एस0एन0 कुरील, डा0 अर्चिका गुप्ता, डा0 विपुल बोथरा, डा0 सुनील कनोजिया, डा0 अखिलेश ।

एनेस्थेसिया टीमः– डा0 अनीता मलिक, डा0 जीपी सिंह, डा0 सरिता सिंह ।

नार्सिंग टीमः– सिस्टर वंदना, टेक्नीशियन संजय ।